सीबीएसई कक्षा - 12 हिन्दी 2010 (केन्द्रिक) सेट-1
(दिल्ली)

निर्देश:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×5=5)

भयानक सूखा है

पक्षी छोड़कर चले गए हैं पेड़ों को

बिलों को छोड़कर चले गए हैं चींटे-चींटियाँ

देहरी और चौखट पता नहीं कहाँ किधर चले गए हैं

घरों को छोड़कर।

कहते हैं पिता

ऐसा अकाल कि बस्ती में दूब तक झुलस जाए

सुना नहीं कभी

दूब मगर मरती नहीं- कहते हैं वे

और हो जाते हैं चुप।

निकलता हूँ मैं दूब की तलाश में

छान डालता हूँ गली-चौराहे

कि अचानक मुझे दिख जाती है

शीशे के बिखरे टुकड़ों के बीच एक हरी पत्ती

दूब है, हाँ-हाँ दूब है-

पहचानता हूँ मैं

लौटकर यह खबर देता हूँ पिता को

अँधेरे में भी दमक उठता है उनका चेहरा

“है, अभी बहुत कुछ है, अगर बची है दूब...”

बुदबुदाते हैं वे।

(क) सूखे की भयानकता को कवि ने कैसे उभारा है?

(ख) ‘लोग अकाल के डर से घरों को छोड़कर चले गए हैं’ - यह भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

(ग) पिता को भीषण अकाल में दूब क्यों याद आती है?

(घ) कवि दूब की तलाश में क्यों निकल पड़ता है?

(ङ) अँधेरे में पिता का चेहरा क्यों दमक उठता है?

उत्तर- (क) पक्षी पेड़ों को छोड़कर चले गए, चींटी-चींटे बिलों को छोड़कर चले गए हैं। लोग घरों को छोड़कर चले गए हैं।

(ख) देहरी और चौखट पता नहीं कहाँ किधर चले गए हैं घरों को छोड़कर।

(ग) क्योंकि कितना भी अकाल पड़े दूब कभी मरती नहीं।

(घ) पिता के विश्वास का प्रमाण ढूँढ़ने कि दूब कभी मरती नहीं।

(ङ) पिता का विश्वास दृढ़ हुआ कि अब भी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ। जीवन की आशा अब भी है क्योंकि दूब जीवित है। इसलिए उनका चेहरा दमक उठा ।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

प्रेमचंद की ‘रोशनी' कहानी का 'कथावाचक’ इंग्लैंड से आई.सी.एस. उतीर्ण कर अफ़सर के रूप में कार्यरत है। उसका विश्वास है कि पश्चिमी सभ्यता, शिक्षा और जीवन शैली से ही भारत का कल्याण होगाइसकी अशिक्षा, जड़ता, अतीत-पूजा, पत्थर-पेड़-पूजा आदि का अंधकार इसी से दूर होगा परंतु उसके तूफ़ान में फंसने पर गाँव की एक देहातिन विधवा उसे मार्ग दिखाती है और ध्यान रखती है कि गर्द गुबार में वह रास्ता न भूल जाए। इस उपकार के बदले वह आई.सी.एस. अफ़सर से पाँच रूपए भी नहीं लेती। अफ़सर गाँव के

लोगों को जाहिल, मूर्ख और बेखबर मानने की अपनी मूर्खता पर लज्जित होता है और देहाती औरत के साहस, कर्तव्यपालन, स्वाभिमान, सेवाभाव तथा ईश्वर विश्वास आदि को देखकर मान लेता है कि एक देहातिन भी आत्मिक शिक्षा एवं संस्कृतिके उच्च स्थान पर बैठी हो सकती है, और इस आत्मिक उन्नयन के लिए पश्चिमी शिक्षा या जीवनशैली की आवश्यकता नहीं होती। प्रेमचंद उस गँवार, देहाती, अनपढ़ औरत को मनुष्यता के शीर्ष पर प्रतिष्ठित करते हैं जिसके प्रभाव से अंग्रेजी संस्कृति का भक्त और भारतीयता से नाक-भौंह सिकोड़ने वाला अफ़सर भी एक अच्छा मनुष्य बन जाता है। प्रेमचंद की यही विशेषता है जो उन्हें अन्य कथाकारों से भिन्न पंक्ति में विशेष स्थान देती है। पढ़े-लिखे और संभ्रांत कहे जाने वाले पात्रों के दंभ को वे अपनी कलम से तार-तार कर देते हैं।

(क) प्रेमचंद को अन्य कहानीकारों से भिन्न क्यों माना गया है? (2)

(ख) गद्यांश में प्रेमचंद की किस कहानी का उल्लेखहै? (1)

(ग) आई.सी.एस. अधिकारी की भारत के बारे में क्या धारण थी? (2)

(घ) ग्रामीणों के प्रति अफ़सर की क्या धारणा थी? (1)

(ङ) अंततः उसे ग्रामीण महिला में किन गुणों के दर्शन हुए? (1)

(च) देहातिन के संपर्क में आने के बाद अफ़सर की विचारधारा में क्या परिवर्तन आया? (2)

(छ) प्रेमचंद उस ग्रामीण महिला को मनुष्यता के शीर्ष पर कैसे बिठाते हैं? (2)

(ज) गद्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (2)

(झ) 'इक' और 'ता' प्रत्यय से एक-एक शब्द बनाइए। (1)

(ज) कर्मवाच्य में बदलिए-एक देहातिन विधवा उसे मार्ग दिखाती है। (1)

उत्तर- (क) प्रेमचंद पढ़े - लिखे और संभ्रात लोगों के स्वभाव के दंभ के खोखलेपन को अपनी कहानियों में तार-तार कर देते हैं और ग्रामीण पात्रों के मानवीय गुणों के प्रमाण देते हैं।

(ख) 'रोशनी' शीर्षक कहानी का।

(ग)

- पश्चिमी शिक्षा, सभ्यता और जीवन शैली से ही भारत का कल्याण होगा।
- इसी से भारत के लोगों का अज्ञान और उनके अंधविश्वास दूर होंगे।

(घ) ग्रामीण जाहिल, मूर्ख और नई बातों से बेखबर होते हैं।

(ङ) ग्रामीण महिला में साहस, कर्तव्य-पालन, स्वाभिमान, सेवाभाव तथा ईश्वर विश्वास आदि गुणों के दर्शन हुए।

(च)

- कि ग्रामीण संस्कृति भी उच्च हो सकती है।
- आत्मिक विकास के लिए पश्चिमी जीवन शैली अनावश्यक है।

(छ) वे प्रमाणित करते हैं कि अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति का भक्त और भारतीयता से घृणा करने वाला व्यक्ति भी ग्रामीण महिला के प्रभाव से बदल गया।

(ज) रास्ता भूलना, नाक भौंह सिकोड़ना, तार-तार करना में से किन्हीं दो का वाक्य प्रयोग।

(झ) इक और ता प्रत्यय से बना एक-एक शब्द

(ज) कर्मवाच्य - एक देहातिन विधवा द्वारा उसे मार्ग दिखाया जाता है।

खण्ड-'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए: [5]

(क) मेरा जीवन स्वप्न

(ख) सूखे की विभीषिका

(ग) आंतकवाद की समस्या

(घ) क्यों पढ़ें हिंदी

उत्तर-

- भूमिका और उपसंहार
- विषय वस्तु वर्णन
- भाषा और प्रस्तुति शैली

4. इरफ़ान केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई में कनिष्ठ सहायक के पद पर काम कर रहे हैं किन्तु क्षेत्रीय कार्यालय इलाहाबाद में स्थानांतरण चाहते हैं। इरफ़ान की ओर से संयुक्त सचिव (प्रशासन) को एक आवेदन पत्र लिखिए और स्थानांतरण चाहने के दो कारणों का भी उल्लेख कीजिए। [5]

अथवा

आप सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हो गए थे। वहाँ उपस्थित पुलिसकर्मी आपकी अनदेखी कर चले गए। मित्रों की सहायता से जब आप

पुलिस स्टेशन पहुँचे तो आपकी ओर से रिपोर्ट भी नहीं लिखी गई। पूरा विवरण देते हुए अपने ज़िले के पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।

उत्तर- पत्र

प्रारंभ और अंत की औपचारिकताएं

प्रश्नानुकूल लेखन

भाषा और प्रस्तुति

5. (क) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए: **(1×5=5)**

(i) प्रिंट माध्यम से क्या तात्पर्य है?

(ii) टेलीविज़न समाचारों में एंकर बाइट क्यों जरूरी है?

(iii) इंटरनेट किसे कहते हैं?

(iv) फ्री लांस पत्रकार किसे कहा जाता है?

(v) रेडियो नाटक से आप क्या समझते हैं?

(ख) 'एक चुनावी सभा' अथवा 'आँखों देखी दुर्घटना' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5]

उत्तर- (क) (i) प्रिंट अर्थात् मुद्रित माध्यम - जैसे अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि।

(ii) खबर को पुष्ट करने और उसे प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष दर्शियों का कथन (एंकर बाइट) जरूरी है।

(iii) सूचना, मनोरंजन, ज्ञान, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए प्रयुक्त टूल (उपकरण)

(iv) किसी खास अखबार से बँधा नहीं होता, वह भुगतान के आधार पर अलगअलग अखबारों के लिए लिखता है।

(v) रेडियो से प्रसारित होने वाली श्रव्य विधा का नाटक।

(ख)

- आलेख की विषय वस्तु
- प्रस्तुति शैली
- प्रभावी भाषा

खण्ड-'ग'

7. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×4=8)

यह तेरी रण-तरी

भरी आकांक्षाओं से,

घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के, आशाओं से

नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

फिर-फिर

बार-बार गर्जन

वर्षण है मूसलधार,

हृदय थाम लेता संसार,

सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।

(क) 'रणतरी' किसे कहा गया है? वह किन आकांक्षाओं से भरी है?

(ख) बादल को 'विप्लव के बादल' क्यों कहा गया है?

(ग) क्रांति की कामना कौन कर रहे हैं? क्यों?

(घ) बादल के किन क्रिया-कलापों को क्रांति के क्रिया-कलाप माना जा सकता है?

उत्तर- (क)

- बादलों को युद्ध में काम आने वाली नौका कहा गया है।
- वह अच्छी लहलहाती फसलों और क्रांति की आकाक्षाओं से भरी है।

(ख)

- बादल वर्षा के द्वारा सूखती फसल को हरा-भरा कर सकते हैं।

- जैसे क्रांति जर्जर समाज में नई चेतना फूँक सकती है।

(ग)

- छोटे-छोटे सुकुमार पौधे, समाज के सबसे निचले वर्ग के लोग।
- क्योंकि क्रांति से सर्वाधिक लाभ उन्हें ही होता है।

(घ)

- बादलों की गर्जना, मूसलाधार बरसना, हुंकार मार कर लोगों को डराना, आदि को क्रांति के क्रिया कलाप माना जा सकता है।

अथवा

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

जोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।

हारकर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोंक दिया ।

ऊपर से ठीक-ठाक

पर अंदर से

न तो उसमें कसाव था

न ताकत !

(क) आशय स्पष्ट कीजिए - बात की चूड़ी मर गई।

(ख) लेखक को क्या डर था? उसके घटित होने का क्या परिणाम हुआ?

(ग) 'कील जैसी ठोंकी हुई भाषा' की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

(घ) काव्यांश का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- (क)

- भाषा के बेतुके प्रयोग से बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है?
- वह व्यर्थ और निरर्थक हो गई।

(ख)

- शब्दों को बिना सोचे-समझे प्रयोग करने से वे प्रभावहीन न हो जाएँ।
- शब्दों के विचारहीन प्रयोग से उनकी शक्ति (प्रभाव) जाती रही।

(ग) वह भाषा ऊपर से तो ठीक-ठाक दिखती हैं पर बे-असर होती है। उसमें कसाव नहीं होता, न ही शक्ति।

(घ) प्रत्येक बात के लिए एक निश्चित शब्दावली होती है। जिससे सरल-सहज भाषा में भी प्रभाव पैदा किया जा सकता है। ऐसा न करने पर, शब्दों से छेड़-छाड़ करने पर बात प्रभावहीन हो जाती है।

8. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2+2+2=6)

नभ में पाँती बँधे बगुलों के पंख

चुराए लिए जातीं मेरी वे आँखें।

कजरारे बादलों की छाई नभ छाया

तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।

(क) काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) काव्यांश में चित्रित प्रकृति सौंदर्य का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

(ग) मानवीकरण का एक उदाहरण छाँटकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- सहज सरल बोली के प्रयोग - पाँती बँधे, कजरारे, हौले-हौले, सांझा।
- सरल तत्सम प्रयोग- नभ, छाया, सतेज, श्वेत काया।

(ख) शाम के समय काले बादल छाए हैं, श्वेत बगुलों की पंक्तियां आकाश में उड़ रही हैं, काले बादलों के नीचे यह सफेद पंक्ति आखों को भली लग रही है।

(ग)

- तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।
- सांझ पर मानवीय क्रिया-कलापों का आरोप

अथवा

प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए बानर निकर।

आइ गयउ हनुमान जिमि करुना मँह बीर रस।।

(क) काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) उत्प्रेक्षा का एक उदाहरण छाँटकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ग) प्रयुक्त छंद का नाम लिखिए और अनुप्रास का एक उदाहरण छाँट कर लिखिए।

उत्तर- (क)

- भाषा सरल, मधुर, अवधी
- तत्सम शब्दों का भी प्रयोग

(ख)

- आइ गयउ हनुमान जिमि करूना मँह बीर रस।
- लक्ष्मण मूछों के कारण वातावरण करुण रस से पूर्ण है। ऐसे में हनुमान का आना वीर रस के समान हैं क्योंकि लक्ष्मण की मूछा टूट जाने पर पुनः युद्ध प्रारंभ हो जाएगा।

(ग)

- छंद – सोरठा
- अनुप्रास- प्रभु प्रलाप,

सुनि कान

बानर निकर

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (3+3=6)

(क) ‘उषा’ कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है -इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

(ख) 'कवितावली' से उद्धृत कवितों के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

(ग) 'बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है' और कविता के शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' में आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- राख से लीपा गीला चौका
- काली सिल पर केसरिया रंग
- काली स्लेट पर खड़िया मिट्टी से लिखना।
- खुले तालाब में युवतियों का नहाना (किन्हीं दो का उल्लेख)

(ख)

- खेती अपर्याप्त, भिखारी को भीख न मिलना, व्यवसाय का अभाव, नौकरी न मिलना, कहाँ जाएँ, क्या करें का भाव, उदरपूर्ति के लिए कठिन कर्म, विपन्नता में बेटा-बेटी भी बेच देना आदि।

(ग) कवि अपने जीवन की जिस स्थिति से ऊब चुका हैं, वही उसके लिए प्रेरक भी हैं, रमणीय भी और उसे स्वीकार्य भी। पर यह समर्पण और सुख-संपत्ति का समृद्ध जीवन अब उसे उबाने लगा है। अतः वह उससे छुटकारा पाना चाहता है।

10. नीचे दिए हुए गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिएः (2×4=8)

बाज़ार जाओ तो खाली मन न हो। मन खाली हो, तब बाज़ार न जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाज़ार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिल्कुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाज़ार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाज़ार की असली कृतार्थता है, आवश्यकता के समय कान्म आना।

(क) आशय स्पष्ट कीजिए - मन खाली हो, तब बाज़ार न जाओ।

(ख) 'लू' का उदाहरण क्यों दिया गया है? इस उदाहरण की सटीकता पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) बाज़ार कब आंनद देता है? कैसे?

(घ) बाज़ार की असली कृतार्थता किसे माना है? क्यों?

उत्तर- (क) मन खाली होने पर बाज़ार जाने पर व्यर्थ और अनावश्यक वस्तुएं भी ज़रूरी और आरामदायक लगेंगी इसलिए वह उन्हें खरीदना चाहेगा और अंततः वे अनुपयोगी और कष्टकारक होंगी।

(ख) पानी पीकर बाहर निकलने से लू नहीं लगती, बेअसर हो जाती है। इसी प्रकार मन को तृप्त कर बाहर निकलने पर बाज़ार का जादू असर नहीं करेगा।

(ग) मन लक्ष्य से भरा हो, मन में खालीपन न हो तो बाज़ार देखने में आनंद आएगा क्योंकि कोई वस्तु लुभाएगी नहीं और हम तनावमुक्त रहेंगे।

(घ) आवश्यकता के समय काम आना। क्योंकि आवश्यकता न हो फिर भी वस्तुएं खरीदना जादू से बंधने जैसा है।

अथवा

"वह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानीवाले बादलों की फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो, तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गाँधीजी महाराज कहते हैं।"

(क) पाठ और लेखक का संदर्भ देकर बताइए कि यह कथन किसका है और किस प्रसंग में कहा गया है?

(ख) बुवाई का सामान्यतः क्या अर्थ है? बादलों की फ़सल पाने के लिए क्या करना पड़ता है?

(ग) दान का महत्व किस प्रकार समझाया गया है? स्पष्ट करें।

(घ) 'व्यक्ति के आचरण से ही समाज का आचरण बनता है।' इस कथन के पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए।

उत्तर- (क) • काले मेघा पानी दे -पाठ
धर्मवीर भारती – लेखक

• लोक विश्वास के अनुसार 'इद्रसेना' या 'मेंढक-मंडली पर पानी उड़ेलने से इंद्रदेवता प्रसन्न होकर वर्षा करते हैं। इस विश्वास पर जीजी लेखक को समझा रही है।

(ख)

- खेतों में बीज बोना।
- बादलों की फसल के लिए पानी का दान करना पड़ता है।

(ग) किसी को कुछ देने से वह दान चौगुना-अठगुना हो कर वापिस मिलता है। दान देना व्यर्थ नहीं जाता, उसका फल अवश्य मिलता है।

(घ)

- मुक्त उत्तर संभव, अतः स्वीकार किए जाएँ।

- पक्ष या विपक्ष में दो संगत तर्क।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए: (3×4=12)

(क) "'नमक' कहानी में भारत और पाकिस्तान की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद भी घुला है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ख) लेखक ने शिरीष को 'अद्भुत अवधूत' क्यों कहा है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर कारणों का उल्लेख कीजिए।

(ग) जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक अंग न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

(घ) चार्ली चैप्लिन कौन था? चार्ली के 'भारतीयकरण' से लेखक का क्या आशय है?

(ङ) अपने बेटों के देहांत के बाद भी लुट्टन पहलवान पहले की भाँति ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर- (क) भारत और पाकिस्तान में विभाजन के कारण कड़वाहट है, पर दोनों देश सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक दृष्टि से एक ही विरासत के साझेदार हैं। परस्पर प्रेम और चाहत का यह स्वाद ही 'नमकीन' है जो कड़वाहट को भुलाता है।

(ख) जैसे संयासी (अवधूत) सुख-दुख, कष्ट सुविधा की चिंता नहीं करता उसी प्रकार शिरीष भी धूप, वर्षा, आँधी से अप्रभावित खड़ा रहता है।

(ग)

- सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन स्वाभाविक नहीं है।
- मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं।
- निजी क्षमता का विचार किए बिना दूसरों द्वारा पेशा निर्धारित किया जाता है।
- जीवन भर एक पेशे मे बांध देती है, भले ही वह पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त हो ।

(घ)

- चार्ली एक हास्य अभिनेता है। उसकी कला को व्यापक स्वीकारोक्ति मिली।
- राजकपूर की 'आवारा', 'श्री 420' जैसी फिल्में चालों का भारतीयकरण हैं।

(ङ)

- गाँव के अन्य रुग्ण, मरणासन्न लोगों की पीड़ा कम हो सके।
- मृत्यु को स्वीकारने का हौसला मिले।
- अपनी बहादुरी और दिलेरी का परिचय वह गाँव वालों को देना चाहता था।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3+3=6)

(क) यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ खुद को ढाल लेती है पर वे ऐसा नहीं कर पाते। आपके विचार से इसके क्या कारण को सकते हैं? 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर लिखिए।

(ख) 'जूझ' के लेखक की छूटी हुई पढ़ाई फिर से शुरू करने में दत्ताजी राव देसाई के योगदान पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'डायरी के पन्ने' के आधार पर महिलाओं के बारे में ऐन फ्रैंक के विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- (क)

- मूल संस्कारों से आधुनिक न होते हुए भी बच्चों के प्रभाव से समय के साथ ढल पाने में सफल होती हैं पर यशोधर बाबू किशन दा से प्रभावित होने के कारण सिद्धातों से ही जुड़े रहे।
- मातृ सुलभ प्रेम के कारण वे अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं जबकि यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी की सोच के हिसाब से सोचते हैं इसी कारण समय के हिसाब से ढल पाने में असफल होते हैं।

(ख) दत्ता जी राव ने पिता को बुलाकर डांटा कि उनका काम छोड़ने के बाद वह अपने खेतों की देखभाल ठीक से नहीं करता, बीवी बच्चों का ध्यान नहीं रखता, अपनी मस्ती के लिए बेटे का जीवन बलि चढ़ा रहा है। पिता के तर्कों को दत्ता जी ने काट दिया। लेखक से कहा कि कल से पाठशाला जाया करे। पिता अगर जाने नहीं दे तो मेरे पास आ जाना। उनके दबाव में ही लेखक को पढ़ने की सुविधा प्राप्त हुई।

(ग) ऐन ने तत्कालीन समाज में औरतों की कारुणिक स्थिति का रूप प्रस्तुत किया है। स्त्रियों को घर की देहरी के बाहर की दुनिया में पैर रखने की इजाजत नहीं थी। सैनिकों को पदक मिलते हैं पर स्त्रियों को कोई सम्मान नहीं दिया जाता। बच्चों के जन्म के समय उन्हें पीड़ा सहन करनी पड़ती है फिर भी उन्हें तिरस्कार मिलता है।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (2+2=4)

(क) 'जूझ' कहानी क्या संदेश देती है?

(ख) 'किशन दा' के अमिट प्रभाव के कारण यशोधर वर्तमान में ताल-मेल नहीं बिठा पाते। 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) ऐन फ्रैंक की डायरी की प्रसिद्धि के दो कारण लिखिए।

उत्तर- (क) जूझ का अर्थ संघर्ष। प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए जीवन में सफलता पाई जा सकती है।

(ख) वे साधारण परिवार की पृष्ठभूमि से थे। घोर परंपरावादी किशनदा उनके आदर्श थे। वे भी परंपराओं का ही निर्वाह करते रहे। जीवन भर बदल नहीं सके।

(ग) ऐन की डायरी यहूदियों को ओर से बोलने वाली आवाज़ है। उस ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है। एक साधारण लड़की की असाधारण सोच। जो स्वयं की अभिव्यक्ति से सामूहिक अभिव्यक्ति बन गई (कोई दो बिंदु अपेक्षित)।

14. 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी पर उसमें भव्यता का आंडबर नहीं था। (5)

उत्तर- मुअन जो-दड़ो शहर का व्यवस्थित ढाँचा और मकानों की बनावट से यह स्पष्ट होता है कि साधन संपन्न होते हुए भी भव्यता नहीं थी। सड़कों की बनावट सीधी-सादी थी। सड़कें चौड़ी नहीं थीं। मकानों की बनावट बहुत भव्य नहीं थी। सामूहिक स्नानागार पूजास्थल, सामुदायिक भवन थे। कपास, तांबे का उपयोग, खेती का प्रमाण प्रकट करता है। भव्य राज प्रसाद व मंदिर नहीं थे, न ही राजाओं से जुड़े चिह्न मिलते हैं। साधनों और व्यवस्थाओं को देखते हुए उसे समृद्ध भी माना गया है, इसमें सभ्यता का आडम्बर नहीं मिलता।

अथवा

'सिल्वर वेडिंग' कहानी के आधार पर पीढ़ियों के अंतराल के कारणों पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि उसे कैसे कम किया जा सकता है?

उत्तर-

- यशोधर बाबू स्वयं पीढ़ी के अंतराल को स्वीकारते है। वे मानते हैं कि उनकी संतानें उनसे अधिक दुनियादारी जानती है। वे रूढ़िवादी हैं, पुरानी परंपराएं, रीति-रिवाज उन्हें अच्छे लगते हैं। वे समय के साथ ढल नहीं पाए, अब भी साइकिल से दफ्तर जाते हैं।
- भौतिक सुख के विरोधी। एनीवर्सरी घर पर मनाना या पार्टी देना उन्हें अच्छा नहीं लगता। उनकी वेशभूषा अत्यंत साधारण थी।
- परिवार के प्रति प्रेम और लगाव से इसे कम किया जा सकता है।
- बच्चों की खुशी में खुश होने से।
- पुरानी परंपराओं और रूढ़िवादिता से उबर कर।